परमात्मा के अवतरण का उचित समय!

इंट्रों

सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग चारों युगों को मिलाकर एक सृष्टि चक्र होता है। इस चक्र में मनुष्य जीवन के उत्थान और पतन की पूरी कहानी एक रंगमंच और नाटक की तरह होता है जिसमें सृष्टि पर आने वाली सभी मनुष्यात्माएं अपने शारीरिक रूप में अभिनय करती हैं। इस दौरान ही सृष्टि चक्र के आदि में श्रेष्ठाचारी दुनिया होती है। जबकि सृष्टि के अंत में भष्टाचारी दुनिया का यानि कलियुगी दुनिया का अंत होता है, आज हर चीज में तमोप्रधानता अपने चरम स्तर पर पहुंच गई है, गीता में बताए कलियुग अंत के लक्षण से भी निम्नस्तर पर मनुष्य पहुंच गया है, जो परमात्मा द्वारा बताए गए कलियुग अंत के लक्षणों को ही इंगित कर रहा है। अब इस बात पर बहस तेज हो गई है कि परमात्मा का अवतरण हो गया है।

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–

आज मनुष्य के लाख प्रयासों के बाद भी न तो उसके जीवन में शांति है और न ही सुख के आसार दिख रहे है। क्योंकि पूरी दुनिया में शांति और सुख स्थापित करना सिर्फ परमात्मा का ही दिव्य कर्त्तव्य है। परमात्मा के कथन है कि जब मैं इस सृष्टि पर आता हूं तो करोड़ों में कोई और कोई में भी कोई ही मुझे पहचान पाते हैं। आखिर परमात्मा कौन हैंघ् कैसे आकर इस दुनिया को बदलने का महान कार्य कर रहे हैंघ् यह सब हम सभी को जानने की आवश्यकता है। तो आइए जानते है कि क्या है शिवरात्रि का अर्थघ् कैसे हो रहा है परमात्मा का अवतरणघ्

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–

शिव के साथ रात्रि का क्या संबंध हैं

विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव प्रायः जन्मदिन के रूप में मनाए जाते है, लेकिन एक परमात्मा शिव की जयंती ही ऐसी है जिसे जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि के नाम से पुकारा जाता है। इसका अर्थ यह है कि परमात्मा शिव जन्म.मरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका अन्य किसी महापुरुष या देवता की तरह कोई लौकिक या शारीरिक जन्म नहीं होता है कि उनका जन्मदिन मनाया जाए। कल्याणकारी विश्व पिता शिव तो अलौकिक अथवा दिव्य जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती संज्ञावाचक नहीं, बल्कि कर्त्तव्यवाचक रूप से ही मनाई जाती है। उनका दिव्य अवतरण विषय.विकारों की कालिमा से लिप्त अज्ञान निद्रा में सोए हुए मनुष्य को जगाने के लिए होता है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है। फाल्गुन मास वर्ष का अंतिम मास होता है और उसकी चौदहवीं रात्रि घोर अंधकार की निशानी है। इस दिन शिवरात्रि को घोर अज्ञानांधकार रूपी रात्रि के समय मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव ने कल्पान्त के घोर अज्ञानता रूपी रात्रि के समय पुरानी सृष्टि के विनाश से थोड़ा समय पूर्व अवतरित होकर तमोगुण और पापाचार का विनाश करके दुख और अशांति को हरा था।

–.

शिव कौन है

भारत देश 33 करोड़ देवी देवताओं का देश है। परन्तु इन सभी देवताओं को बनाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा शिव है। जिसकी अनेक धर्मों, अनेक रूपों में भले ही पूजा की जाती हैं। परन्तु उसका केन्द्र बिन्दु परमात्मा शिव के पास ही जाकर समाप्त होता है। परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव, ब्रहा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों को के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालें को जानने वाले त्रिकालदर्शी है। विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव है। परमात्मा जन्ममरण से न्यारे है उनका जन्म नहीं होता बल्कि परकाया प्रवेश होता है। परमपिता शिव अजन्मा हैं, अभोक्ता, ज्ञान के सागर है, आनंद के सागर है, प्रेम के सागर, सुख के सागर है। उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है। परमात्मा शिव परमधाम के निवासी है। शिव का अर्थ ही है 'कल्याणकारी'। परमात्मा शरीरधारी नहीं है। इसका मतलब ये नहीं कि उनका कोई आकार नहीं। बल्कि स्थूल आंखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योति स्वरूप है। परमात्मा शिव को सभी ग्रंथों, पुराणों और वेदों में भी सर्वोपरी ईश्वर माना गया हैं।

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–

कहां है परमपिता परमात्मा शिव का निवास स्थान

आज लोगों ने अज्ञानता के कारण मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मान लिया है, जो मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है।

परमात्मा के बारे में जानने के बाद यह स्पष्ट रूप से हमें जानने की आवश्यकता है कि परमात्मा तथा हम सभी मनुष्यात्माएं कहां से इस सृष्टि पर आती हैं। इस सृष्टि चक्र में तीन लोक होते हैं।

पहला स्थूल वतन, दूसरा सूक्ष्म वतन और तीसरा मूल वतन अर्थात परमधाम। मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम निवास करते है यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों से बनी हुई है। इसे कर्म क्षेत्र भी कहते हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा कर्म करता हैं, वैसा ही फल भोगता है। इसी लोक में ही जन्म.मरण है। अतः इस सृष्टि को विराट नाटक शाला अथवा लीलाधाम भी कहा जाता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन और कर्म तीनों हैं।

यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र में है। स्थापना, विनाश और पालना आदि परम.आत्मा के दिव्य कर्त्तव्य भी इसी लोक से संबंधित है। सृष्टि की हर 5000 वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है और आत्माएं नियत समय पर पार्ट बजाने आती हैं।

सूर्य.चांद तारागण से पार है सूक्ष्मलोक

सूर्य.चांद से भी पार एक अति सूक्ष्म (अव्यक्त लोक है। उस लोक में पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे लाल प्रकाश में विष्णु पुरी और उसके भी पार महादेव शंकर पुरी है। इन तीनों देवताओं की पुरियों को संयुक्त रूप से सूक्ष्म लोक कहते है। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वत्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वत्र आदि की तरह पांच तत्वों से नहीं बने हैं। दिव्य चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है। इन पुरियों में संकल्प और गति तो है, लेकिन वाणी अथवा ध्वनि नहीं है। इसमें मृत्यु, दुख या विकारों का नामोनिशान नहीं होता। धर्मराजपुरी भी इसी सूक्ष्मलोक में ही है।

सूक्ष्म लोक से ऊपर है अखंड ज्योति ब्रह्म तत्व

सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है। इसे अखंड ज्योति ब्रह्म तत्व कहते हैं। यह तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका साक्षात्कार दिव्य चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सभी धर्मे की आत्माएं अव्यक्त वंशावली में इसी लोक में निवास करती हैं। इसे ब्रह्मलोक, परमधाम, शांतिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म हैं। अतः वहां न सुख है, न दुख है बल्कि एक न्यारी अवस्था है। इस लोक में अपवित्र अथवा कर्म बंधन वाला शरीर नहीं होता है।

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–

निराकार हैं परमात्मा शिव

परमपिता परमात्मा शिव निराकार हैं। निराकार का अर्थ यह नहीं कि उसका कोई आकार नहीं। परन्तु उसका शारीरिक आकार नहीं होता वह सूक्ष्म ज्योर्तिमय है। जैसे हम अपनी आत्मा को नहीं देख सकते। वैसे ही परमात्मा को भी स्थूल आंखों से नहीं देखा जा सकता। उसके लिए तीसरे नेत्र अथवा दिव्य नेत्र की जरूरत होती है।

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–

ज्योतिर्लिंग शब्द का क्या अर्थ है ?

विश्व के प्रायः सभी धर्मो के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं कि परमात्मा एक है। परन्तु सबसे आश्चर्यजनक एवं विरोधाभासी तथ्य परमात्मा के संबंध में एक ही मुंह से अनेक बातें हैं। परमात्मा के संबंध में असत्य, भ्रामक और एकांगी विचारों के कारण ही समाज में हिंसा, घृणा और तृष्णा का जन्म हुआ है।

यह संसार भ्रम संसार बन गया है। इसके साथ ही सभी धर्मों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है। वह यह कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। इस संबंध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद है, स्वरूप के संबंध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है, क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिन्ह। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परपपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (प्रन्द्व कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैंद्ध के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है। चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थायी रूप में मूर्तियां स्थापित न भी करें, लेकिन फिर भी पूजा.पाठ, प्रार्थना अथवा अन्य पवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृति में अपने घरों अथवा धार्मिक स्थानों, मंदिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं। भारत में विश्व के 12 प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंग मठ कहा जाता है। इनमें हिमालय स्थित केदारेश्वर, काशी में विश्वनाथ, सौराष्ट्र प्रदेश में सोमनाथ और मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में महाकालेश्वर अति प्रसिद्ध है।

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–

वर्तमान कलियुग का सारा काल ही 'महारात्रि'

वर्तमान समय कलियुग का अंतिम चरण चल रहा है, यह सारा काल, रात्रि अथवा महारात्रि ही है। हम सभी नर. नारियों को यह शुभ संदेश देना चाहते है कि अब परमपिता परमात्मा शिव संसार को पावन तथा सुखी बनाने के लिए फिर से प्रजापिता ब्रहा के तन में अवतरित होकर सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। अतः हम सबका कर्तव्य है कि उनकी आज्ञानुसार हम नैष्ठिक पवित्रता और शुद्धता का पालन करें और शिव के अर्पण होकर संसार की ज्ञान सेवा करे। वास्तव में यही सच्चा पाशुपत व्रत है। इसका फल मुक्ति और जीवन.मुक्ति की प्राप्ति माना गया है। अब मनुष्यों को चाहिए कि विकारों रूपी विष से नाता तोड़कर परमात्मा शिव से अपना नाता जोड़े।

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.

परमात्मा के अनुसार अति धर्म की ग्लानि का समय

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत् अभ्युत्थानम्धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्।

यह महावाक्य सर्वआत्माओं के पिता परमपिता परमात्मा के है जब वे इस धरती पर आकर अपना दिव्य और महान कार्य करते हैं उसी दौरान ऐसी घोषणा करते हैं। इस दुनिया का श्रेष्ठ निर्माण स्वयं परमात्मा करते हैं, परन्तु जब मनुष्य अपने कर्मों में निम्न स्तर पर पहुंच जाता है। मनुष्य के रूप में होते हुए भी उसके हाव, भाव, कर्म, सोच सब कुछ मनुष्यता के विपरीत हो जाते हैं। दुनिया में सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी वे ऐसे कर्मों को अंजाम देते हैं जिसेसिर्फ असुर ही करते हैं। ऐसा शात्रों, पुराणों और वेदों में भी वर्णित है।

ऐसे कार्यों का शात्रों में भी नहीं हैं उल्लेख

सवाल धर्म की ग्लानि का लें तो अभी तक शात्रों में भी जो धर्मग्लानि की बात कही गई है, आज के लोगों के कर्म उससे भी निम्नस्तर के हो चुके हैं। मनुष्य ऐसे घृणित काम कर रहा है, जिसके बारे में ना तो कभी शात्रों में लिखा गया है और ना ही आज के पहले किसी ने सोचा होगा। आज देश और दुनिया में भक्ति का रूप और तादाद दोनों ही बड़ी तीव्रता से बढ़ी हैं, परन्तु उसमें तमोप्रधानता आ गई है।

मनुष्य पापों से इतना बोझिल हो गया है कि वह मंदिर व मस्जिद में भी केवल स्वार्थ की पूर्ति के लिए ही जाता है। मुझे धन दे दो, मुझे पुत्र दे दो, नौकरी, कोई बच्चा, तो कोई.कोई अपने दुश्मन को ही समाप्त करने का वरदान और मन्नतें मांगने लगता है। उन लोगों की संख्या बहुत ही कम है जो अपने लिए मुक्ति और जीवनमुक्ति का आशीर्वाद मांगते हैं।

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.

संबंधों की मर्यादा हो गई तार.तार

आज संबंधों में इतनी गिरावट आ गई है कि जिसके बारे में कभी सोचा ही नहीं जा सकता है। बाप.बेटी, पिता.पुत्र, भाई.बहन, माँ, बेटे के संबंधों में भी निम्न स्तर की घटनाएं आए दिन सुनने और देखने को मिल जाती है। यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि आज जानवर भी ऐसा कर्म नहीं करते है। आज मनुष्य की कीमत तुच्छ हो गई है। एक.दूसरे की हत्या करना तो आम हो गई है। आज जानवरों और पशु.पक्षियों का मनुष्यों के बजाए ज्यादा महत्व है । मांस, मदिरा का सेवन, आतंकवाद, चीरहरण, दुष्कर्म, अपराध, घिनौनी हरकतें, चोरी, घूसखोरी, दादागिरी, हत्या आदि की तो बाढ़ सी आ गई है। धर्म के नाम पर अधर्म खून खराबा, मजहबी झगड़ा उनके लिए आम हो गया है।

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.

परमात्मा देते सच्चा गीता ज्ञान

परमपिता शिव परमात्मा पांच तत्वों से निर्मित एक मनुष्य तन में प्रवेश करते हैं और उनके मुख द्वारा सर्व जीवात्माओं को गीता.ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर अधर्म का विनाश तथा सद्.धर्म की पुनर्स्थापना कराते है। भारतवर्ष में योगियों के परकाया प्रवेश की बात तो सर्वविदित है। फिर परमात्मा शिव तो योगियों के भी योगी हैं। परमात्मा का अवतरण ज्ञान.योग की शिक्षा देकर जीवात्माओं को पतित से पावन बनाने के लिए होता हैं। इसलिए परमात्मा का अवतरण पुरानी दुनिया में होता है।

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.

जब से होश संभाला, तब से संभाल रहा परमात्मा

मैंने जब से होश संभाला उस वक्त से ही परमात्मा ने मुझे संभालना प्रारंभ कर दिया। प्रारंभ में तो हमें शिवबाबा का ज्ञान नहीं था। परन्तु ब्रहा बाबा ने हमें एक.एक करके समझाया। उस समय तो बाबा के सामने जो भी आता साक्षात्कार होने लगता। मैं जब पहली बार बाबा के सामने गई तो सबकुछ भूल गई और बाबा ने भी हमें समझ लिया यह बच्ची बाबा की सेवा करेगी। बाबा को तो मैंने बहुत करीब से देखा है। मेरी जिंदगी उसके हाथों में हैं। जैसे चलाता है वैसे ही मैं चलती हूं। ईश्वर ने जो पढ़ाया और जो पढ़ा रहा है उसे एक बच्चे की तरह से पढ़ती हूं। शिवबाबा को इस दुनिया में आए 75 वर्ष हो गए। बाबा बच्चों में ऐसे संस्कार भरते है कि एक साधारण मनुष्य श्रेष्ठ बने। हम सभी आत्माएं भाई.बहन हैं। सभी को एक.दूसरे को इसी रूप में ही देखना चाहिए ताकि उनके मन में सदैव उस शरीर में स्थित आत्मा ही दिखाई दे। यही परमात्मा का संदेश है। अब दुनिया परिवर्तन के करीब है। अंधकार समाप्त होगा और नई दुनिया सतयुग के रूप में आयेगी। परमात्मा को इस सृष्टि पर अवतरित हुए 75 वर्ष हो गए।

राजयोगिनी दादी जानकी जी, मुख्य प्रशासिका, प्रजापिता ब्रहाकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, माउण्ट आबू , राजस्थान

–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.–.

बाबा की प्रेरणा से किया जा रहा कार्य

माउण्ट आबू के पवित्र, शुद्ध वातावरण का लाभ उठाने का अवसर मिला। इसके लिए अपने को बहुत भाग्यवान समझती हूं। ब्रह्मा बाबा, शिव बाबा की प्रेरणा से जो कार्य किया जा रहा है वह बेमिसाल है। मुझे नहीं लगता कि दुनिया में कोई और भी ऐसी संस्था है जो कर पाएगी। विश्व कल्याण का दूसरा कोई रास्ता नहीं है। दादी के तन में बाबा आए, मुझे पता भी नहीं था कि वे बात भी करेंगे पर उन्होंने मेरे से बात भी की। बहुत अच्छी अनुभूति हुई। परमात्मा द्वारा दिया जा रहा यह संदेश देश की युवा पीढ़ी तक पहुंचाने की जरूरत है।

श्रीमति प्रतिभा पाटिल, पूर्व राष्ट्रपति, भारत

सभी ने स्वीकारी परमात्मा शिव की सत्ता

इंन्टों

परमात्मा उसे कहते हैं जिसे विश्वभर की मनुष्य आत्माओं ने किसी न किसी रूप में स्वीकार किया हो, जो सर्वमान्य हो, सर्वज्ञ हो, जिसका कोई माता-पिता न हो, सर्वशक्तिमान हो, निर्वैर हो। ऐसे ही देवों के भी देव महादेव परमपिता परमात्मा शिव हैं इनके अस्तित्व को सभी धर्मों ने अलग-अलग रूप से स्वीकारा है। चाहे भारत हो या फिर दुनिया का कोई भी देश चाहे जापान हो, यूनान हो या फिर मिस्र से लेकर बेबीलोन सभी ने परमात्मा की व्याख्या परम ज्योति, सूर्य के समान तेजोमय प्रकाश के रूप में ही की है।

भारत में सबसे प्राचीन ते प्राचीन मंदिर ज्योतिर्लिंगम् परमात्मा शिव के ही दिखाए हुए हैं। उसमें भी विशेष रूप से आज भी महान तीर्थ स्थान के रूप में माने जाते हैं। सभी बारह ज्योतिर्लिंगम् भारत वर्ष के हर कोने में स्थापित है। भारत के चारों कोनों में शिवलिंग की पूजा अवश्य ही होती है। उसके मंदिरों के जो नाम है वो भी गुणवाचक, कर्तव्यवाचक हैं। यदि विश्व के सारे जंगल को कलम और समुद्र को स्याही बनाया जाए तो भी हम उस परमिता परमात्मा की महिमा को नहीं लिख सकते है। नार्थ में शिव की अमरनाथ के रूप में पूजा होती है अर्थात् जो अमर आत्माओं का नाथ है।

देवताओं ने भी ली शिव से शक्ति

ईस्ट में जाएंगे तो सोमनाथ का मंदिर मिलता है। सोमनाथ अर्थात् सोम अमृत देने वाला नाथ। परमात्मा की पूजा सारे भारत भर में होती है। इसलिए परमात्मा को ज्योतिर्लिंगम कहा जाता है। वो देवों के भी देव महादेव हैं, जिसकी पूजा सभी देवताओं ने की है। जब भी देवताओं पर संकट आए, वे शिव से शक्ति लेने के लिए उनके पास आए।

शिव की पूजा होती है चहुंओर

आज भारत के अंदर देखा जाए तो देवताओं की पूजा क्षेत्रीय स्तर पर हो गई है अर्थात् नार्थ की तरफ जाएंगे तो श्रीराम, श्रीकृष्ण की पूजा मिलेगी। दक्षिण की ओर श्री व्यंकटेश्वर या श्री बालाजी अर्थात् विष्णु की पूजा होती है। ईस्ट में काली पूजा, दुर्गा पूजा मिलेगी। वेस्ट में गुजरात एवं महाराष्ट्र की ओर श्रीगणेश की पूजा मिलेगी। अर्थात् देवताओं की पूजा क्षेत्रीय स्तर की हो गई, लेकिन शिव की पूजा सारे भारत भर में होती है।

गॉड इज लाइटः जीसस

जीसस ने भी गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा है गॉड इज लाइट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। जीसस ने कभी यह नहीं कहा, आई एम गॉड। उसने भी उस लाइट को परमात्मा का स्वरूप बताया। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया है कि जब हजरत मूसा शिनाई पर्वत पर गये तो वहाँ पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हजरत मूसा ने कहा- जेहोवा। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ड टेस्टामेंट में लिखे हुए है। चर्च में जाएंगे तो वहां पर हमें मोमबत्तियां मिलती हैं। उसमें भी एक बड़ी मोमबत्ती होती है। बाकी सब छोटी मोमत्तियां होती है। बड़ी मोमबत्ती परमात्मा का प्रतीक है। छोटी मोमबत्तियां आत्माओं का प्रतीक है।

..वो अखंड ज्योत है

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखंड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर के वहां स्थापित करते है जो सदा जलती आई थी, जो सदा अखंड है, परमात्मा का दिव्य स्वरूप है। तो इस धर्म में ज्योतिस्वरूप पिता परमात्मा की एक ही मान्यता है।

मिस्र ने भी स्वीकारा परमात्मा का अस्तित्व

मिस्र में शिवलिंग की पूजा आईसिस और ओसिरिस नाम से होती थी। ओसिरिस शब्द 'ईश' शब्द से बना है। शिवलिंग की प्रतिमा के साथ बैल की मूर्ति रखा करते थे। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के पति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

यूनान में भी होती है शिव की पूजा

यूनान में जाएंगे तो शिवलिंग का नाम 'फल्लुस' प्रचलित है। यहां शिवलिंग की पूजा उनके धर्म का प्रधान अंग थी। शिवलिंग के पास ही वे बैल की मूर्ति स्थापित किया करते थे। बैल को सभी देशों में धर्म का सूचक माना जाता रहा है। चूंकि शिव सत्धर्म की स्थापना करते है। इसलिए उनका वाहन बैल दिखाया जाता है। यूनान में शिवलिंग को फल्लुस नाम से याद करते थे। क्योंकि वह तुरंत फल देने वाले परमात्मा की प्रतिमा है।

थाइलैंड में शिव को ऐस्टररिंग्स नाम से पूजा

स्याम थाइलैंड में भी एकोनिस और ऐस्टररिग्स नाम से शिवलिंग पूजे जाते रहे हैं। यहूदियों के यहां शिवलिंग को बेलफेगो कहते हैं। ये लोग शिवलिंग की स्थापना करके बाल नाम से पूजते है। भारत में भी शिवलिंग के अनेक मंदिर बालेश्वर नाम से है। ये लोग बाल अथवा बालेश्वर की मूर्ति के सामने धूप-दीप आदि जगाते थे। यहां शपथ को नेम कहते है। ये शिवलिंग को सत्य स्वरूप परमात्मा की प्रतिमा मानने के कारण उसके सामने नेम अथवा शपथ लेते थे। सिक्ख धर्म में गुरुनानक देव ने कहा है एक ओंकार निराकार। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वेर है, सतनाम् है जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वेर, सत्यनाम कहा।

———————————————————————

वाक्स में

जापान में भी लगाते ज्योति पर ध्यान

जापान में तीन फीट की ऊंचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में लाल पत्थर रखा जाता है। जो शिकोनिजम सेक्ट वाले हैं वो इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। उसका नाम दिया है चिंकोनसेंकी। चिंकोनसेंकी का अर्थ है जो शांति का दाता है। जिसका ध्यान लगाने से शांति प्राप्त होती है। ये लोग तीन फीट ऊंचाई पर तीन फीट दूर बैठकर उसके सामने ध्यान लगाते है। उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। फ्रांस में गिरजाघरों में तथा अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक रूप में देखे जाते है। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मित्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फैजी देश में वहां के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' नाम से पूजते है। स्पष्ट है कि ये सभी नाम और सेवाजिया नाम शिव से या शिवजी से बने हैं।

——————————————————————————————————

... इन्होंने भी की परमात्मा शिव की आराधना

श्रीराम ने भी शिव को पूजा

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्री राम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या, आराधना करके प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए उस परम शक्ति परमात्मा की शक्ति के बिना वह युद्ध में विजयी नहीं हो सकते। अतः उन्होंने भी शिव की आराधना की।

श्रीकृष्ण ने युद्ध के पहले की शिव पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिमान्, गुणों के भंडार, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और पांडवों कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले है।

शंकर भी लगाते हैं शिव का ध्यान

हम देखते है कि शंकर हमेशा ध्यान की अवस्था में बैठे होते हैं। इससे स्पष्ट है कि उनके भी कोई आराध्य या देव हैं ? जिनका वह स्मरण करते रहते है। परमपिता परमात्मा शिव शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें शंकर बैठकर निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते है। शिव ही सबके आराध्य परमपिता हैं।

अल्लाह को कहा वो नूर..वो तेज.. वो तेजोमय

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करना चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसको वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम कहा, ज्योति स्वरूप कहा है। ज्योति माना ही तेज। उन्होंने नूर-ए-इलाही कहा। इसलिए हर मुसलमान जब नमाज पढ़ते है तो मक्का की दिशा में नमाज पढ़ते हैं। जिसको भारत वर्ष में मक्केश्वर कहा अर्थात् मुसलमानों ने अल्लाह, नूर-ए-इलाही कहकर के निराकार को ही याद किया। अतः सभी ने किसी न किसी रूप में उस परमसत्ता, सर्वशक्तिमान की सत्ता को स्वीकारा है।

——————————————————

... मैं ब्रह्मा के ललाट से प्रकट होऊंगा

ये वाक्य शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है। वहीं महाभारत में भी अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई जो नए युग की स्थापना के निमित्त बना वर्णित है कि मनुस्मृति में भी परमात्मा की व्याख्या हजारों सूर्य के समान तेजस्वी के रूप में की गई है।

वेदों-पुराणों में भी शिव अवतरण की बात कही गई है। शिव पुराण में लिखा है कि भगवान शिव ने कहा- मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा। इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुगृह करने के लिए शिव ब्रहाजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रूद्र हुआ। (यह्व वाक्य शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है) शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा सृष्टि रचा। शिवपुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उनके द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना की।

विश्व की सर्व आत्माओं का पर्व

इस पौराणिक उल्लेख का भी यही भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के ललाट में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दुख से भरे एवं तमोगुणी हो चुके संसार का कल्याण किया। यदि शिवरात्रि के आंचल में छिपे आध्यात्मिक रहस्यों को पूर्ण रूप से समझा जाए तो विश्व परिवर्तन सहज ही हो सकता है। शिवरात्रि सिर्फ शैव संप्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं है, लेकिन सारे विश्व के प्रमुख धर्म, प्राचीन सभ्यता और प्राचीन संस्कृति को देखें तो स्पष्ट होता है कि यह पावन पर्व विश्व की सर्व आत्माओं के लिए ही है।

...जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी है

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरंभ में एक अंड प्रकट हुआ, जो हजारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिवपुराण में धर्मसंहिता में लिखा है कि कलियुग के अंत में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ। इस तरह हम देखते हैं कि भारत के सभी वेद-ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात कहीं गई है। कहीं उसकी व्याख्या अण्डाकार ज्योति के रूप में, तो कहीं सूर्य से भी प्रकाशमान ज्योति के रूप में की ¸ü है।

जागो ! अभी नहीं तो कभी नहीं

हे! मनुष्य आत्माओं अब समय आ चुका है विषय-विकारों से मुक्त होकर परमपिता परमात्मा से मंगल मिलन मनाने का। अभी नहीं तो कभी नहीं कहीं। ऐसा न हो परमात्मा आकर के अपना कार्य कर जाएं और हम देखते ही रह जाएं। समय निकल जाने पर हमारे पास पछतावे के अलावा और कुछ हाथ नहीं रह जाता है। यदि हमें अपने भाग्य को जगाना है और नई सतयुगी दैवी सृष्टि स्थापना के इस कार्य में सहयोगी बनना है, तो परमात्मा शिव के इस महान कार्य में अपना तन-मन-धन सफल कर 21 जन्मों की बादशाही के मालिक बनने का सुअवसर हमारे सामने है।

वाक्स में

जिहोवा शिव का पर्यायवाची

देखा जाए तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रंथों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक तोरेत का आरंभ भी ऐसे ही होता है। सृष्टि संरचना की प्रक्रिया इस प्रकार से है कि सृष्टि के आरंभ में ¸ü ध्ड्ढड्ड की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि काल में परमात्मा ने ही आदम एवं हवा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग रचा। भगवान का नाम जिहोवा मानते हैं जो कि परमपिता परमात्मा शिव का ही पर्यायवाची है। भारत के तो कोने-कोने में शिव की ही यादगार है।

महाभारत में भी लिखा एक ज्योति ने की नवयुग की स्थापना

महाभारत में भी लिखा है कि सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रहा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।

सर्व के नाथ हैं शिव

आज कुछ ऐसे प्रश्न है जिनका उत्तर जानना हमारे लिए बेहद जरूरी है। जैसे परमपिता परमात्मा को ज्योतिर्लिंगम क्यों कहा? क्योंकि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप निराकार है। जिनका अपना कोई शरीर नहीं है तथा जो सदा ज्योति के समान प्रकाशमान है। परमात्मा को ज्योति स्वरूप का एक लिंग रूप बनाकर मनुष्य के सामने रखा ताकि मनुष्य अपनी भावनाएं अर्पित कर सकें। पूजा कर सकें। भारत में भी मंदिरों के नाम के पीछे भी नाथ या ईश्वर शब्द जुड़ा है। क्योंकि वो सर्व का नाथ, सर्व का ईश्वर है। जैसे नाथ के रूप में मान्यता है। भोलेनाथ, सोमनाथ, विश्वनाथ, बबूलनाथ, अमरनाथ आदि। ईश्वर के रूप में-गोपेश्वर, विश्वेश्वर, पापकटेश्वर, रामेश्वर, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर। सर्व का नाथ और ईश्वर वहीं एक परमात्मा शिव है।

परमात्मा कर रहे अपना कार्य

वर्तमान समय की हालत को देखें तो यह शिव परमात्मा के आने का अनुकूल समय है और वह आकर अपना कार्य कर भी रहे हैं। कहीं यह सुअवसर हमारे हाथ से निकल न जाए। हमें इस परिवर्तन की बेला में स्वयं का परिवर्तन कर अपना भाग्य जगाना है। मनुष्य की वास्तविक उन्नति उसे कल्याण की क्रियात्मक प्राप्ति एवं आनंद की आध्यात्मिक अनुभूति तो शिव से मन को जोड़ने से ही प्राप्त होती है। अतः हे! मनुष्य थोथी विद्वता की बातों को छोड़कर अपनी उन्नति और अपने आध्यात्मिक लाभ की बात सोचते हुए तूं ज्योतिबिन्दू शिव से योग लगा।

परमात्मा का स्मरण चिह्न शिवलिंग

शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिन्ह। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परपपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जन्ड्ड कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थायी रूप में मूर्तियां स्थापित न भी करें, लेकिन फिर भी पूजा-पाठ, प्रार्थना अथवा अन्य पवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृति में मंदिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते है।

हमेशा रहता है बाबा मेरे संग

मैं बाबा के संग और बाबा मेरे संग हमेशा रहता है। हमारे हर सांस में बाबा बसा है। शिवबाबा ने हमें अपना बना लिया और आज अपने सेवा का महान कार्य करा रहा है। परमात्मा ने हमारी पालना बिल्कुल मॉ-बाप समान की है। बाबा हमेशा हम लोगों को ठाकुर कहकर पुकारते थे। हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे है। क्योंकि परमात्मा ने बिल्कुल मां-बाप जैसी पालना की। परमात्मा के साथ हमारा पूरा जीवन सफल हो गया। मनुष्यात्माएं सभी परमात्मा के बच्चे है और सभी को परमात्मा से आकर अपना वर्सा लेना चाहिए। क्येंकि समय बहुत तेजी से बीत रहा है। समय निकल जाने के बाद तो कुछ नहीं बचेगा।

राजयोगिनी दादी ह्दयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

हां, परमात्मा आए हैं धरा पर

परमात्मा कौन है, कैसा दिखाई देता है, कहां रहता है, उससे मिल सकता हूं या नहीं, क्या मैं अपनी इच्छाएं और आशाएं उसे बता सकता हूं, क्या मैं उसके प्यार और शक्ति का अनुभव कर सकता हूं यह सवाल लगातार मेरे मन में था। 48 साल की उम्र में जब मैंने यह निश्चय कर लिया कि शायद अब इन सवालों का जवाब नहीं मिल सकता है, तभी मुझे वो सौभाग्य मिला जो बहुत कम लोगों को मिलता है। इसके बाद मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गया। परमात्मा स्वयं धरती पर आते है और अपना परिचय देते है। स्वयं की, हर एक आत्मा की इस संसार में क्या भूमिका है उसकी कहानी सुनाते है। संसार के लोग तो परमात्मा संबंधी बाते स्पष्ट और सही नहीं बता पाते। इन बातों को स्वयं परमात्मा ने बताया और नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे है।

निजार जुमा, अध्यक्ष, 51 अन्तर्राष्ट्यी कम्पनीज, केन्या

..हां हुई ईश्वरीय शक्ति की अनुभूति

पूरे विश्व में ईश्वर से साक्षात्कार कराने वाली एक ही संस्थान हैं ब्रह्माकुमारीज़। ऐसा पूरे विश्व में कोई संस्थान नहीं है जो ईश्वर से जोड़ने की सीधी विधा बता रही हो, परमात्मा का साक्षात्कार करा रही हो। सीधे परमात्मा से मिलाने वाला यही एक संस्थान है। माउण्ट आबू में आने पर संसार में रहने वाले प्रत्येक प्राणी ईश्वर के सम्मुख होता है और उसमें उर्जा का समावेश हो जाता है। विश्व परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। जो माउण्ट आबू से संचालित की जा रही है। जैसे कई नदियों का उद्‌गम अलग-अलग होता है, परन्तु सभी नदियां समुद्र में ही जाकर मिल जाती है। इस प्रकार कई माध्यम भले ही परमात्मा का ज्ञान दे रहे है परन्तु सभी को परमात्मा से जोड़कर मिलाने वाली यह संस्था है। संस्था का लक्ष्य जीवन में परमात्मा का ज्ञान धारण की परमात्मा के समीप जाने एवं प्राप्त करने का है। यह परमात्मा का कार्य है। आज भी परमात्मा का अवतरण होता है। मैंने अनुभव किया है।

रसिक पीठाधीश्वर महंत जन्मजेयशरण, अध्यक्ष श्री श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट बड़ा स्थान, अयोध्या

हां होता, परमात्मा का अवतरण

यह सुनने में भले ही अजीब सा लगे परन्तु सच है। आज पूरा समाज और युग वैज्ञानिक युग हो गया है। हर जगह विज्ञान के साधन किसी भी चीज को परखने एवं जांचने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, परन्तु परमात्मा की कार्यशैली बिल्कुल अलग है। गीता में भी भगवान ने कहा है अर्जुन जब मैं इस सृष्टि पर अवतरित होता हूं तो मुझे कोई में भी कोई इसे ही जानता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आज वही आत्मा-परमात्मा के मिलन की बेला और वहां नई दुनिया की स्थापना का कार्य चल रहा है। परमात्म मिलन की शैली अपने आप में अलग और दिव्य है। कुछ लोगों की जुबानी जानते है परमात्मा मिलन की कहानी....

———————————————————————————

परमात्मा ने स्वयं दिया था अपना परिचय

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ।

दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आयी। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया कि

निजानन्द् स्वरूपम शिवोहम्, शिवोहम्।

आनन्द स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्।

प्रकाश स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्।

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के

दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

————————————————————

एक बार जरूर अपने पिता से मिलें

वैसे तो परमात्मा के बारे में सिर्फ हमने सुना था कि परमात्मा इस रूप में आता है, ऐसे मिलता है। परन्तु मुझे कभी यह विश्वास नहीं हुआ कि हम कभी परमात्मा से मिल पाएंगे। परन्तु मैं उन भाग्यशाली लोगों में से हूं जिन्हें केवल परमात्मा मिलन का ही नहीं, बल्कि हर पल उनके अंग-संग रहने का अवसर मिल रहा है। सत्तर के दशक में मैं अपनी नौकरी छोड़कर परमात्मा द्वारा जो दुनिया बदलने का महान कार्य चल रहा है उसमें शामिल हो गया। सचमुच ईश्वर हमारा पिता है, हम उनके बच्चे हैं। इसका एहसास तो तब होता हैं जब वास्तव में उनसे मिलते हैं। उनके प्यार का एहसास करते है। परमात्मा इस दुनिया में साकार रूप में आकर विश्व बदलाव का कार्य कर रहे हैं। मैं तो सभी से अपील करता हूं कि जो भी इस दुनिया में परमात्मा के बच्चे हैं, एक बार आकर जरूर अपने सच्चे परमपिता परमात्मा से मिले और अपने जीवन को श्रेष्ठ और मूल्यवान बनाएं।

ब्रह्माकुमार निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

—————————————————————————

परमात्मा ने मुझे अपना बच्चा कहा

सन् 1960 में पहली बार बैंगलोर में ब्रह्माकुमारी संस्था के सम्पर्क में आया। वहां मुझे बताया गया कि परमात्मा का अवतरण हो गया है। यह सुनते ही मैंने उनसे मिलने का निश्चय किया और बिना देर किए माउण्ट आबू के लिए रवाना हो गया और माउण्ट आबू पहुंच गया। जब मैं आबू पहुंचा तो देखा कि एक इतना धनवान व्यक्ति जिसका कनेक्शन महारानी एलिजा बेथ से लेकर तमाम नामीग्रामी व्यक्तियों के साथ है। वह एक झोपड़ी में बैठकर साधु की तरह तपस्या कर रहा है। मैं यह सब देखकर स्तब्ध रह गया। मैं सात दिन तक पूरे समय उनके अंग-संग रहा। हमने पाया कि उनके जो भी कर्म थे वे बिल्कुल अलग थे। स्थूल काम भी होता तो उनके टच करते ही सबकुछ बदल जाता। उनके बोल-चाल सबकुछ बिल्कुल भिन्न। जब उन्होंने मुझे बच्चा कहकर अपनाया तो मैंने हमेशा के लिए अपना जीवन समर्पित करने का निश्चय कर लिया और आज भी उस ईश्वरीय शक्ति से मिलन होता है।

ब्रह्माकुमार करुणा, प्रबंध निदेशक, पीस ऑफ माइंड चेनल, आबू रोड, राजस्थान

————————————————————

परमात्मा से मिलना जिंदगी के अमूल्य क्षण

मैं तो अपने जीवन को सोचकर धन्य हो जाती हूं कि मेरा जीवन कितना श्रेष्ठ है। पता नहीं मेरे में क्या विशेषता थी कि स्वयं परमात्मा ने 16 वर्ष की आयु में ही अपने विश्व परिवर्तन के कार्य में लगा लिया। सुबह उठते भी बाबा का साथ, सोते भी बाबा का साथ, इतना बड़ा कारोबार, इतना बड़ा परिवार ये सब परमात्मा का ही तो हैं। परमात्मा स्वयं मुझे सम्भालता है। मेरा अनुभव है कि यदि आप परमात्मा को अपना बनाओ तो आपकी पालना वही करेगा। संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी के साथ रहने का जो अवसर मिला था जिसके कारण मैं परमात्मा के और करीब आ गई। आज हमारे खून में सिर्फ परमात्मा की सेवा और याद दौड़ती है। परमात्मा से मिलना उनसे शक्ति लेना जिन्दगी के अमूल्य क्षण है।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी, कार्यक्रम प्रबंधक, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड

————————————————————

समस्याओं का अपने आप होने लगा समाधान

चारों युगों में महात्माओं, साधुओं, संतों, विज्ञान की सारी बातें सुनने और देखने को मिलती रही है। सभी ने अपने-अपने रीति से शांति स्थापन की बात की है। परन्तु समस्याएं घटने के बजाए बढ़ती ही गई। परन्तु जब मैं इस संस्था के सम्पर्क में आया और देखा कि यहां आने से ही समस्याओं का अपने आप समाधान होने लगा। परमात्मा की शिक्षा एवं उनके महावाक्य बिल्कुल सहज और असाधारण हैं। पवित्र बनने की शक्ति, सत्यता को परखने की शक्ति, संबंधों के निभाने की निपुणता, दिव्यता, मधुरता आदि की शक्ति स्वयं परमात्मा के सान्निध्य में आने से ही विकसित होने लगती है। उनकी एक दृष्टि जीवन बदल देती है। मैं तो यह नहीं समझ पाया कि परमात्मा ने कैसे मुझे अपना बनाकर इस विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बना लिया। आज मैं धन्य हूँ जो परमात्मा के हर कार्य में मददगार हूं। दुनिया के सभी लोगों से मेरी अपील है कि इस कलियुग के अन्त में परमात्मा के रूप को पहचाने और अपने को श्रेष्ठवान बनाएं।

ब्रह्माकुमार मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

————————————————

बाबा द्वारा दी हुई ऊर्जा आज भी दौड़ रही है

मैं तो बचपन से ही ब्रह्मा बाबा के अंग-संग पली बढ़ी। लेकिन जिस तरह से शिवबाबा ने बाबा के तन में आकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य प्रारंभ किया वह किसी अजूबे से कम नहीं था। उसमें भी माताओं बहनों को आगे रखकर जो एक नया मुकाम दिया वह अपने आप में अनोखा और दिव्य था। जैसे-जैसे शिवबाबा को पहचानते गए जिंदगी में बदलाव और शक्ति बढ़ती गई। आज भी बाबा अवतरित होकर अपना कार्य करा रहे हैं। जल्दी ही नई दुनिया की स्थापना हो जाएगी। मुझे खुशी है कि हमारा सारा जीवन परमात्मा द्वारा रचे हुए यज्ञ में सफल हो गया। बाबा ने प्रारंभ के दिनों में जिस तरह से शक्ति और ऊर्जा भरी वह आज भी उसी गति से दौड़ रही है। ईश्वर पर जीवन अर्पण करना और नई दुनिया के कार्य में सहयोगी बनना एक सुखद अहसास है। सर्व मनुष्य आत्माओं को परमात्मा का ये संदेश है कि सभी मनुष्य आत्माएं परमपिता परमात्मा से आकर अपने अधिकारों की वर्षा लें तथा नई दुनिया के सहभागी बने।

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माऊंट आबू, राजस्थान

—————————————————

ईश्वरीय शक्तियों को महसूस किया है

ब्रह्मा बाबा के साथ साकार में रहे हुए है। ईश्वरीय शक्ति को महसूस किया है। परमात्मा आ चुके है यह सत्य हैं। क्योंकि आज की ऐसी दुनिया में परमात्मा अपना कार्य करा रहे है। मैं अपने बारे में कहूं तो जिस तरह हमारे जीवन में एक अप्रत्याशित बदलाव आया वह किसी भी मनुष्य के लिए करना कठिन है। बिना परमात्मा के सान्निध्य के यह सम्भव नहीं है। यह कार्य कोई मनुष्य करा ही नहीं सकता। हम भक्ति में परमात्मा शिव को मानते है। हमेशा शिव परमात्माएं नमः कहते है। कभी भी शंकराए नमः नहीं कहते हैं। तो परमात्मा शिव अब प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे है। हम उसमें सहयोगी है। लोगों को भी खुद को जानने और समझने का यही उचित अवसर है। क्योंकि समय तीव्र गति से अपने परिवर्तन की ओर बढ़ रहा है।

ब्रह्माकुमार बृजमोहन, प्रधान संपादक, प्यूरिटी मैगजीन, दिल्ली

—————————————————————

मेरे जीवन में आए कई बदलाव

ईश्वर का कार्य कैसे होता है और परमात्मा कैसे आकर कार्य करता है। यह मैंने करीब से देखा है। मेरे जीवन में कई ऐसे बदलाव आए जो परमात्मा के बिना हो ही नहीं सकता। जब हम बाबा के सम्मुख होते है और उनकी दृष्टि पड़ती है, तो स्वयं का अस्तित्व स्पष्ट महसूस होने लगता है। सारी कर्मेन्द्रिया और ज्ञानेन्द्रिया प्रफुल्लित हो जाती है। इसे बयां नहीं किया जा सकता।

ब्रह्माकुमारी सरला दीदी, जोनल इंचार्ज, ब्रहाकुमारीज़, गुजरात जोन, अहमदाबाद

——————————————————————————

हमें ईश्वर से जुड़ने का अवसर उस समय मिला जब लौकिक पिता ने शरीर छोड़ दिया था। बाबा से मिलने के बाद लगा कि अब हमारे असली पिता मिल गए है। क्योंकि बाबा के प्यार में एक कशिश होती थी। एक रूहानी प्यार आत्मा के सभी मूल्यों को जगा देता था। यह प्यार कभी भी मनुष्य के संग से पाया ही नहीं जा सकता। परन्तु जो शिव बाबा के साथ का अनुभव है उसे स्पष्ट करना नामुमकिन है। क्योंकि ऐसा सुख और ऐसी अनुभूति कभी भी नहीं हो सकती। सचमुच परमात्मा इस दुनिया में अवतरित होकर अपने बच्चों को ढूढ़ रहा है नई दुनिया बना रहा है।

ब्रह्माकुमार अमीरचन्द, जोन इंचार्ज, पंजाब जोन, ब्रह्माकुमारीज़

बचपन से थी परमात्मा को पाने की ललक

परमात्मा को पाने की ललक बचपन से ही थी। प्रतिदिन ईश्वर की पूजा करना मेरी दिनचर्या में शुमार था। कई बार ये बातें मन में खटकती थी कि आखिर परमात्मा से कैसे मिलन होगा। एक दिन मेरी माताजी को पता चला कि ओम मंडली में माउण्ट आबू से संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा आए है। मैं कौतूहल भरे भाव से वहां गई और सामने ब्रह्मा बाबा को देख अलौकिक शक्ति का खिंचाव हुआ। वहीं एक ऐसा मेरे जीवन में परिवर्तन हुआ कि लगा कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। इसके बाद से मेरी रूचि बढ़ी और मैं काफी करीब हो गई। परमात्मा शिव का कार्य चल रहा है और वे ब्रह्मा बाबा के माध्यम से पढ़ा रहे है। यह स्पष्ट रूप से देखने को मिलने लगा। मेरे दिल को ईश्वरीय शक्ति छू गई और मैं परमात्मा की हो गई। मैं धन्य हूं जहां बाबा को साक्षात्कार हुआ, वहां सेवा करने का अवसर मिला।

ब्रह्माकुमारी सुरेन्द्र, सब जोन इंचार्ज, ब्रह्माकुमारीज़ वाराणसी एवं पश्चिमी नेपाल क्षेत्र, सारनाथ,

----

मैंने ईश्वरीय शक्ति का एहसास किया है

हां मैंने ईश्वरीय शक्ति का एहसास किया है। हमारा उनसे सीधा सम्पर्क होता है। हम जो चाहते है वह पूरा होता है। मन में शांति होती है। कोई भी हो परमात्मा को याद करना, उनसे मिलन मनाना आसान है। परमात्मा से मिलन मनाने के बाद मन बहुत निश्छल हो जाता है और किसी के प्रति राग-द्वेष नहीं रह जाता है। भारत परमात्मा के अवतरण की भूमि हैं। हमें परमात्मा से जो कुछ भी मिलता है उसे दूसरों को भी देना है।

गोविन्द लाल बोरा, प्रधान संपादक, अमृत संदेश समाचार-पत्र, रायपुर

माउण्ट आबू परमात्म अवतरण भूमि

माउण्ट आबू सचमुच परमात्मा मिलन का महाकुम्भ है। नई दुनिया के स्थापना की गुप्त तैयारी हो रही है। वह भी परमात्मा के सान्निध्य में, वहां के वातावरण में कदम रखते ही महसूस होने लगता है। जब मैं परमात्मा से मिलता हूँ तो अथाह शक्तियों का संचार होने लगता है। मन में जो भी द्वंद्व, ांतियां, सवाल, उलझन होती है, वह तुरन्त समाप्त हो जाती है। जब हमने यहां की ज्ञान प्रक्रिया को समझा तभी मुझे एहसास हो गया कि यह ज्ञान किसी साधारण मानव का नहीं हो सकता। दुनिया पाप के अति चरम पर जाना शीघ इसके बदलाव की निशानी है। क्योंकि परमात्मा का कार्य गुप्त रूप में चल रहा है। हर एक को परमात्मा को पहचानना चाहिए।

सीताराम मीना, आयुक्त, व्यापार एवं श्रम विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, कानपुर

दादी के तन में आते भगवान

भगवान के अवरतण की कहानी वैज्ञानिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक किसी भी रूप में उनका प्रस्तुतिकरण को इंसान व्यक्त कर ही नहीं सकता। उनसे मिलने वाले वायब्रेशन परमात्मा की सभी शक्तियों का एहसास कराते हैं। बाबा जब दादी में आते है तो उनका स्टाइल, उनकी बोलचाल की भाषा और दिया जाने वाला ज्ञान सब कुछ ईश्वर का ही हो सकता है। जब उनके सामने जाते है तो अपने वास्तविक रूप की स्पष्ट पहचान होने लगती है। कोई भी इंसान इस तरह का कार्य करा ही नहीं सकता। सभा में बैठे बीस हजार लोगों को एक साथ उनकी मनोवृत्ति को समझ कर पढ़ाना यह केवल ईश्वर ही कर सकता है।

डॉ. अवधेश शर्मा, प्रसिद्ध मनोचिकित्सक एवं पूर्व अध्यक्ष, इंडियन एसोसिएशन प्राइवेट मनोचिकित्सा संघ

परमात्म मिलन की अनुभूति शब्दों में बयां नहीं कर सकता

परमात्मा के मिलन की अनुभूति को मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता हूं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझता हूं जो कि मुझे स्वयं परमात्मा से मिलने का अवसर मिला। मैंने अनुभव किया है कि स्वयं परमात्मा इस सृष्टि पर माउंट आबू में आते है। परमात्मा का ज्ञान असाधारण है। इस ज्ञान को हर कोई अपने जीवन में धारण कर सकता है। साथ ही कोई भी समझ सकता है। परमात्मा से मिलने का अनुभव निराला है। बस जरूरत है उसे सही परखने की। यह तय है कि एक दिन परमात्मा के निर्देशन में बदलाव की मुहिम दुनिया के समक्ष जरूर प्रत्यक्ष होगी। यह सच है कि परमात्मा सभी गुणों और शक्तियों का सागर है। वह विपत्तियों में हर वक्त हमारे साथ रहता है। सभी समस्याओं का शीघ निराकरण हो जाता है।

डॉ. अरविन्द ढाली, विधायक एवं पूर्व यातायात मंत्री, उड़ीसा

दादी के तन में बाबा के अवतरण को देखा

विज्ञान में विश्वास रखने वाले लोग कभी भी शात्रों एवं अंधविश्वास की बातों में यकीन नहीं करते। मैं भी उन लोगों में से ही था। क्येंकि वैज्ञानिकों का दिमाग रेशनल एवं लॉजिकल होता है। शात्रों में कई बातें ऐसी है जो बिल्कुल विश्वास करने

योग्य नहीं है। रचना का ज्ञान सिर्फ रचता को ही मालूम होता है और वही सत्य बता सकता है। जिसमें हर कोई विश्वास करे। जब मैंने स्वयं दादी के तन में बाबा के अवतरण को देखा तो वह केवल तार्किक ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सटीक महसूस हुआ। बाबा जिस तरीके से आन्तरिक बदलाव की प्रक्रिया और भूत एवं भविष्य के ज्ञान को सर्व मनुष्यात्माओं के सामने रखते हैं। वह हर प्रकार से स्वीकार करने ही योग्य है। यह सच है कि ऐसा कार्य सिर्फ परमात्मा के अलावा कोई करा ही नहीं सकता है।

अविनाश चन्द्र टिक्कू, पूर्व निदेशक, रिएक्टर गुप, भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर, मुंबई

——————————————————

भगवान पुनः इस सृष्टि पर आ चुके हैं

अभी तक हम भगवान को एक मान्यता के रूप में जानते थे। विज्ञान एक ओर जहां प्रयोग की बात करता है। वहीं आध्यात्मिकता हमें शांति की अनुभूति की शक्ति देती है। ईश्वर एक सर्वोपरि सत्ता है। जिसके ज्ञान, प्रेम, गुण, एवं शांति को हम हर पल अनुभव कर सकते हैं। अपने अनुभव के आधार पर मैं पूरे विश्वास के साथ यह बता सकती हूं कि अभी ही अधर्म के चरमोत्कर्ष और सत्धर्म की स्थापना के संगम का समय है। जब परमपिता परमात्मा स्वयं भारत भूमि पर अवतरित होकर हमें आध्यात्मिक ज्ञान दे रहे हैं। ज्ञान एक प्रकाश है, ज्ञान एक शक्ति है। परमात्मा के ज्ञान से जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन होता है। मैं खुद उसकी साक्षी हूं। मैं अपने अनुभव पर यह बता सकती हूं कि गीता का भगवान पुनः इस सृष्टि पर आ चुके हैं और नई दुनिया की स्थापना का कार्य हो रहा है।

प्रोफेसर डॉ. मधु जैन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

————————————————————

ह्दय में अवर्णनीय अनुभूति

बाबा मिलन के वक्त डायमंड हॉल के सभागार में बैठने पर ही अनोखी प्रकार की अनुभूति होने लगती है। आध्यात्मिक शक्तियों से शुभ कार्य करने का महान कार्य हो रहा है। बाबा की अनुभूति ह्दय में अवर्णनीय है। लगता है कि बाबा ने बह्माकुमारीज़ संस्था तथा स्वामीनारायण संस्था को एक साथ ही कार्य करने जैसा प्रेरणा देता है। स्वामी लक्ष्मी प्रसाद शास्त्री, स्वामीनारायण मंदिर, अहमदाबाद

——————————————————

ऐसा स्थान कहीं नहीं देखा

मैंने बहुत से स्थान देखे परन्तु बाबा के घर का वातावरण जैसा कही भी नहीं मिला। इतना सर्वोच्च प्रबंधन, बेहतर अनुशासन ऐसा लगता है कि यह बिल्कुल अलग दुनिया है। यहां के लोगों में जिस तरह का नियंत्रण है। वह बिना शिवबाबा की याद और मिलन के संभव ही नहीं है। बार-बार आने का मन करता है।

वर्षा उसगांवकर,फिल्म अभिनेत्री, मुंबई

————————————————————

माऊंट आबू में परमात्मा को अनुभव किया

1974 में ब्रहाकुमारीज़ के ज्ञान से परिचित हुआ और 1980 से इसे ठीक से समझ पाया। यह समझ पाया कि यह भी उस उच्चतर सत्ता से संचालित है। जो अव्यक्त रहकर भी अपने ध्येय को पूरा कर रही है। अब ठीक से याद नहीं है पर 80-82 में यहां आबू पर्वत पर ओम-शांति भवन में ही परमात्म अवतरण को प्रथम बार अनुभव किया था। ब्रह्मा बाबा के बारे में तो अपने पूर्व ज्ञान और संस्था के विस्तार तथा कार्य से अनुभव हो गया था कि वे उच्चतर अव्यक्त सत्ता से जुड़े हुए हैं। पर वह उच्चतर अव्यक्त सत्ता शिव हैं, यह भरोसा इस पहले अवतरण में हुआ। दादी गुलजार की स्थिति, उनकी स्थिर और कहीं अपने में खोई हुई आंखें, और संबोधन में समष्टि उसके भरोसे के आधार थे। तीन घंटे के दौरान मैंने उन्हें किसी भी तरह की सांसारिक स्थिति या व्यवहार में अनुभव नहीं किया। मेरा यह भरोसा बाद के सभी वर्षों में पुष्ट ही होता चला गया। यह पुष्टि इस बात की थी कि अव्यक्त सत्ता की जो भी सर्वोच्च सत्ता है, वह उस समय होती है और वह संसार के कल्याण के अतिरिक्त अन्य किसी प्रसंग में रूचि नहीं लेती। व्यक्ति और समाज के कल्याण का इतना उच्चतम रूप मैंने किसी अन्य मार्ग में अनुभव नहीं किया। जिन्हें हम पूजते हैं वे हम ही हैं, ऐसा कहने नहीं करने का प्रयत्न, वह भी समष्टि के साथ, अन्यत्र नहीं है। अव्यक्त की इस उपस्थिति को उसके बाद इस पूरे प्रयत्न में सदा ही अनुभव करता रहा हूं। अवतरण के इस प्रसंग को ही देख और समझ कर मैं, इलहाम, अनुभवन, स्थिति आदि और अवतरण में अंतर कर पाया हूं।

– प्रो. कमल दीक्षित, वरिष्ठ पत्रकार एवं पूर्व विभागाध्यक्ष पत्रकारिता विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल

——————————————————————————

ईश्यरीय शक्ति के सान्निध्य में हो रहा काम

बाबा का आगमन बहुत अच्छा लगा, माऊंट आबू ब्रह्माकुमारीज़ का वातावरण अच्छा लगता है। लोगों की भावना अच्छी लगती है। पवित्रता, शांति और सद्भाव परमात्मा की शक्ति से ही सुदृढ़ हो पाती है। यहां ईश्वरीय शक्ति के सान्निध्य में काम हो रहा है। मुझे तीन बार आने का अवसर मिला है। यह हमारे लिए अति सुखद है। बाबा से भी मिलने का अवसर प्राप्त हुआ है। यह बहुत बड़ा भाग्य है।

करुणाकरन भंते, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बौद्ध गया महाबोधि बिहार, ऑल इंडिया कमेटी

सारी बातों का समाधान हो गया

मैं तो इंजीनियरिंग की छात्रा रही हूं। पवित्र और शांतिमय दुनिया कैसे हो सकती है। इसको लेकर कई सवाल थे। जब मैं शिव बाबा से मिली तो मेरी सारी बातों का समाधान हो गया। तुरन्त लगा कि परमपिता परमात्मा शिवबाबा के अलावा दूसरा कोई कर ही नहीं सकता।

पूनम वर्मा, राजपत्रित अधिकारी, हरियाणा बोर्ड ऑफ टेक्निकल एजुकेशन, फरीदाबाद

आत्मा परमात्मा के मिलन का महाकुंभ यहां...

इन्ट्रों

जी हां पूरी दुनिया में केवल एक ही ऐसी जगह है जहां आत्मा-परमात्मा के मिलन का साक्षात् महाकुम्भ होता है। यह सच है, यह मिलन पिछले 75 वर्षों से लगातार जारी है। ज्ञान की गंगा में ज्ञान स्नान कर वे सभी लोग देवत्व की राह पर चल पड़े हैं। दुनिया के किसी भी कोने में अगर उन्हें आप स्पर्श करें तो शायद सभी का एक ही उत्तर मिलता है, नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनना है। इतना ऊंचा मुकाम है, फिर भी इसकी सफलता उनके नयनों में साफ झलक जाएगी। इस संस्था की बागडोर माताओं-बहनों के हाथ में है। यह पूरे विश्व की पहली ऐसी संस्था है जिसका संचालन माताएं-बहनें करती हैं। यही नहीं बल्कि दुनिया भर में तेजी से बढ़ रहे अत्याचार, भष्टाचार, अपराध, हत्या, अश्लीलता, संबंधों में हो रही गिरावट को रोकने और एक बेहतर विश्व की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वहीं सर्व मनुष्यात्माओं को राजयोग की शिक्षा देकर स्वयं तथा परमात्मा के परिचय के साथ ईश्वरीय मिलन का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

——————————————————

आत्मा-परमात्मा का मिलन महाकुम्भ भारत के पश्चिमी छोर पर स्थित राजस्थान के माउण्ट आबू में जारी हैं। जिसमें भारत सहित पूरी दुनिया से हजारों की संख्या में लोग भाग लेते हैं तथा ईश्वरीय शक्ति से मिलन मनाते हैं।

परमात्मा ने ब्रह्मा के तन का लिया आधार

चूंकि परमात्मा का अपना शरीर नहीं होता है। कहा जाता है बिन पग चले सुनै बिन काना, कर्म करहूँ , केहि विधि नाना। सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (जन्त्रु अभी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का बिल्कुल एक छोटे स्तर से प्रारम्भ हुआ। क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके कि यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। उस दौरान चूंकि परमात्मा को भारत और वन्देमातरम् की गाथा को चरितार्थ करना था। इसलिए माताओं बहनों के सिर पर ही ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

14 वर्ष तक की कठिन तपस्या

परमात्मा तो जानी जाननहार है इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को और शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या करायी। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं और बहनें तथा कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी अध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही हैं।

1950 में माउण्ट आबू में हुआ स्थानांतरण

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू आई। माउण्ट आबू में से ही पूरी दुनिया में ईश्वरीय निर्देशन में अध्यात्म और परमात्म के अवतरण के आने की सूचना और विश्व परिवर्तन की कार्य का शंखनाद हुआ।

वट वृक्ष का रूप ले चुकी है संस्था

75 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई यह संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। ब्रह्माकुमारीज़ के पूरे विश्व के 137 मुल्कों में करीब आठ हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्रों के माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना तथा उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा जारी है। आज दुनियाभर से लोग परमात्मा अवतरण में हिस्सा् लेते है।

———————————————————

भगवान आ चुके हैं धरती पर

शिव को तो अजन्मा और मृत्युंजय माना गया है। वो तो देवों के भी देव सर्वेश्वर है, अतः उनका जन्म किसी देवता या मनुष्य के रूप में नहीं होता है। शिव तो कर्मातीत और सदा–मुक्त हैं, इसलिए वह नस–नाड़ी के बंधन में नहीं आते। वह तो महाकालेश्वर हैं। इसलिए वह बाल, युवा, वृद्ध अथवा जन्म–मरण रूप काल के वश में भी नहीं होते हैं। शिव की महिमा को हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते है। विश्व के नर–नारियों को दुखों और पापों से मुक्त करने के लिए स्वयं आकर के अपना परिचय देते है। सतयुगी पावन तथा सुखी सृष्टि रचने के लिए वह कलयुग के अंत में एक साधारण मनुष्य के तन में परकाया प्रवेश करते है। जिसका नाम वह प्रजापिता ब्रह्मा रखते है।

उनके मुख से ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर वह मनुष्य को देवता बनाते है। स्वयं परमात्मा शिव इस सृष्टि पर आकर भारतवासियों का चारित्रिकि नव–निर्माण करके सतयुगी दैवी सृष्टि की पुनः स्थापना करते है।

—————————————————————

शिव के विषय में ांतियां

भारत में शिवलिंग की पूजा तो काफी व्यापक स्तर पर होती है, लेकिन फिर भी शिव के बारे में ऐसी बहुत सी कपोल कल्पित कथाएं प्रचलित है जिनसे सिद्ध होता है कि लोग अपने पूज्य परमात्मा शिव के विषय में भी कुछ नहीं जानते हैं। ये कथाएं अतिशयोक्ति, मिलावट और मनगढ़ंत वृत्तांतों से भरपूर ही नहीं बल्कि ऐसी है जिनसे शिव पर मिथ्या दोष आरोपित होता है।

इनमें शिव का पार्वती पर मोहित होना, दक्ष प्रजापिता का चंद्रमा के साथ अपनी 27 कन्याओं का विवाह करना तथा बाद में उसे श्राप देना इत्यादि कहानियां, निरा गप नहीं तो और क्या हैं? परमपिता शिव और उनकी रचना–ब्रहा, विष्णु और शंकर के विषय में अज्ञान होने के कारण लोग मतभेद में पड़कर इनके विषय में काम–वासना से भरपूर कलंक लगाते है। साथ ही कभी विष्णु को परमात्मा सिद्ध करने में देवताओं और असुरों में युद्ध इत्यादि की दंतकथाएं प्रचलित कर देते हैं।

————————————————

परमात्मा जानते सभी की जन्मकुंडली

निराकार परमात्मा शिव त्रिकालदर्शी हैं। वे सर्व आत्माओं की जन्मपत्री को जानते हैं। उन्हें पता है कि कौन मनुष्यात्मा उनका वाहन बन सकती है। सर्व जीवात्माओं में प्रजापिता ब्रहा में ही इतना सर्वस्व समर्पण करने की अपूर्व क्षमता है। तभी तो शिवालयों में निराकार परमात्मा शिव के साथ उनके वाहन नंदीगण की भी प्रतिमा स्थापित की जाती हैं। ज्ञानदाता या तो ज्ञान सागर परम–आत्मा शिव को कहते हैं या प्रजापिता ब्रहा को। अवश्य ही दोनों में कुछ अभिन्न संबंध होगा। प्रजापिता ब्रहा को सदा वृद्ध दिखाते हैं। क्या कोई वृद्ध रूप में उन्पन्न हो सकता हैं। कदापि नहीं।

प्रजापिता ब्रहा का शरीर भी बच्चे के रूप में ही पैदा हुआ था, लेकिन वानप्रस्थ अवस्था के पूर्व वे एक साधारण मनुष्य थे। वृद्वावस्था में परमात्मा शिव उन्हें अपना रथ–नन्दीगण परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रहा की उच्चतम उपाधि देते है। परमात्मा शिव ब्रहा के साकार तन द्वारा प्रायलोप गीता–ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर सतयुगी सृष्टि की पुनर्स्थापना कराते हैं।

—————————————————————

अवजानन्ति माँ मूढ़ा मानुषी तनुमाश्रितम्, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।

परमात्मा ने गीता में नौवें अध्याय 11वें श्लोक में कहा है कि मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मुझको मूढ़मति लोग नहीं जानते। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूँ तो भी व्यक्त भाव वाले वे लोग मुझे नहीं पहचान सकते। वहीं यजुर्वेद (32/2) का वचन है कि सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युत पुरूषाधि, अर्थात वह

विद्युत पुरूष ज्योतिर्लिंग प्रगट हुआ जिससे निमेष जज्ञिरे विद्युत पूरूषादधि, अर्थात वह विद्युत पुरूष प्रगट हुआ जिससे निमेष कला का आदि का प्रारम्भ हुआ।

———————————————————–

माउण्ट आबू शिव बाबा का घर

यह ईश्वर का घर है, परमात्मा शिवबाबा का घर है। जब मैंने ध्यान करना प्रारंभ किया तो ऐसी अनुभूति हुई कि यह अनुभूति मेरे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी बन गई। मेरे जीवन का सबसे शुभ दिन था। मेरा तो शिवबाबा, ब्रह्मा बाबा और पूरा विश्व ही अपना परिवार है। जनता की सेवा करने में यह ईश्वरीय शक्ति और अनुभव काम आएगा। परमात्मा के सब हैं, यही सत्य है। इसके अलावा कोई और अस्तित्व नहीं है। सभी लोगों को परमात्मा का ज्ञान लेकर अपने जीवन को सुखी बनाना चाहिए। शिव बाबा सचमुच एक नया समाज बना रहे हैं।

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

——————————————————

हां, मैं ईश्वर से साक्षात् मिला हूं...

हां, मैं बिल्कुल ईश्वर से साक्षात् में मिला हूं। गुलजार दादी के अंदर बाबा आते है। मैं बिल्कुल सामने बैठा था। जब दादी के अंदर बाबा आए तो सब कुछ बदल गया। परमात्मा के सामने मैं बैठा था, तो सोचा कि बाबा क्यों नहीं बुला रहे है। तो तुरन्त बाबा ने मुझे बुलाया और मैं उनके सामने जाते ही सबकुछ भूल गया और मुझे अपनी असलियत की स्पष्ट छवि महसूस होने लगी है। लगा जैसे मैं यहां हूं ही नहीं। ऐसा अलौकिक सुख मिला जो कभी किसी भी चीज से मिल ही नहीं सकता। यह सच है परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे है।

– न्यायाधीश रमेश गर्ग, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, गुवाहाटी, उच्च न्यायालय

——————————————————————

परमात्मा का हर वक्त अनुभव करता हूं

परमात्मा शिवबाबा, प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के तन से नई दुनिया की स्थापना कर रहे है। यह मेरे जीवन का अनुभव है। मैं तो धन्य हूं जो परमात्मा के साथ का हर वक्त अनुभव करता हूं। परमात्मा हमारा पिता है वह हमेशा हमारी मदद करता है, साथ रहता है। ऐसा सुख कभी कोई इंसान दे ही नहीं सकता। दुनिया के सभी लोगों को जरूर एक बार परमात्मा के इस महान कार्य को देखना चाहिए और अपने को आत्मा समझते हुए उसे मिलन मनाना चाहिए। यह परमात्मा का संदेश है और हमारी अपील भी।

न्यायाधीश वी ईश्वरैय्या, एक्टिंग मुख्य न्यायाधीश, आंधप्रदेश, उच्च न्यायालय

————————————————————

पहले कभी नहीं देखा ऐसा दृश्य

चार वर्ष पहले जब मैं बाबा से मिला और यह मेरे जिन्दगी का शानदार अनुभव रहा। बाबा आने के समय मैंने दस हजार लोगों को देखा जब बाबा आए तो उनकी ऊर्जा से सबको शक्ति मिलना प्रारंभ हो गई। कम से कम पांच हजार विदेशी मेहमान थे जो काफी उत्साहित थे। मैंने कभी भी पहले ऐसा दृश्य नहीं देखा। सर्वोच्च सत्ता कैसे हर एक को संबोधित कर रही है।

जेके दादू, संयुक्त सचिव, वाणिज्य मंत्रालय, दिल्ली सरकार

—————————————————

परमात्मा से व्यक्ति की तरह होता संवाद

शांति और पवित्रतता की आबोहवा हमेशा ही दिल को छूती है। यह आत्मा का निजी गुण है। परमात्मा से मिलने के बाद एकाग्रता बढ़ जाती है और आन्तरिक सशक्तिकरण होने लगता है। परमात्मा से मिलन और उनसे संवाद बिल्कुल एक व्यक्ति की तरह होता है। कोई भी समस्या, कोई भी बातें सहज ही हल हो जाती है। स्वयं परमात्मा खड़ा होकर अपना कार्य करा लेता है। जब हम परमात्मा से मिलते हैं तो उस समय सिर्फ हमारे और ईश्वर के साथ ही संवाद होता है। जबकि हजारों की संख्या में लोग बैठे होते हैं।

सचमुच परमात्मा की महिमा अपरमपार हैं और वह सर्वशक्तिमान् है। जो लाखों लोगों से एक साथ संवाद करता है। शिवरात्रि का महापर्व इस परमात्मा के अवतरण का ही पर्व है।
राकेश मेहता (आईएएस), राज्य निर्वाचन आयुक्त दिल्ली एवं चण्डीगढ़ एवं पूर्व मुख्य सचिव, दिल्ली सरकार
——————————————————

यहां सतयुग की हो रही स्थापना

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के प्रत्येक भाई-बहनों के चेहरे और चलन से पवित्रता शांति और सद्भाव झलकता है। सतयुग की यहां स्थापना हो रही है। बाकी सब लोग केवल अपने-अपने तरीके से बातें करते है। परन्तु यहां की कार्यपद्धति जिस तरह से परमात्मा के निर्देशन में हो रही है, वह अपने आप में अद्भुत है। दैहिक भाव से परे अव्यक्त सत्ता परमात्मा के अवतरण की बेहद सुखद अनुभूति है। जो बयां नहीं की जा सकती। बाबा आकर दादी के माध्यम से ज्ञान और दिशा देते है यह महसूस होता है। परमात्मा से जुड़ने का मुझे महान अवसर मिला है। हमारा भी भाग्य जमा हो जाएगा। परन्तु उसके लिए विश्वास के साथ जुड़ने की जरूरत है। इससे ही विश्व का भला होगा और
एक दिन जरूर निराशा के बादल छटेंगे।
स्वामी चक्रपाणि, अध्यक्ष, हिन्दू महासभा, दिल्ली
————————————————————

सारे सवालों का मिल गया जवाब

यह कलियुग के अंत और सतयुग के आदि का संगमयुग है। परमात्मा आकर नई दुनिया की स्थापना कर रहे है। जब तक मैं इनसे अनभिज्ञ था तब तक मन में कई सवाल थे। कहां से मिलेगी शांति, कौन है आत्मा का पिता? जीवन में स्थायी सुख शांति कैसे होगी? क्योंकि परमात्मा ने दुनिया के वैभव तो हमें बहुत दिए हैं। लेकिन जिन्दगी को जो सुकून, जो संतोष चाहिए, वह नहीं मिल रहा था। जैसे ही हमें बाबा का ज्ञान मिला और हम उनसे मिले। मेरे सारे सवालों का जवाब मिल गया और हलचल समाप्त हो गई। आज मैं अपने आप को संतुष्ट, खुश और आनन्दमयी जीवन का लुत्फ उठा रहा हूं। परमात्मा द्वारा इस धरती पर बनाई जा रही दुनिया में मददगार हूं।
डॉ. भक्तवत्सलम, पदमश्री अवॉर्ड से सम्मानित एवं अध्यक्ष, केजी हॉस्पिटल समूह, कोयम्बटूर
———————————————

जीवन जीने की कला आ गई

परमात्मा कोई स्थूल चीज नहीं है कि उसे इन आंखों से साक्षात् में देखे और मिले। परमात्मा तो सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु है और उसी प्रकार आत्मा भी ज्योतिर्बिन्दु है। जब हम अपने आप को आत्मा समझते है तभी परमात्मा से मिलन का अनुभव कर सकते है। जैसे गुड़ खाने वाले से ही पूछ सकते है कि इसका स्वाद कैसा है। बिना खाए उसके असली स्वभाव को नहीं व्यक्त कर सकते है। वैसे ही परमात्मा मिलन की अनुभूति भी होती है। सबसे पहले तो परमात्मा द्वारा दिया हुआ ज्ञान समझिए और फिर उसके बाद परमात्मा से मिलिए आपको अनुभूति और मिलन का प्रत्यक्ष एहसास होने लगेगा। जबसे मैं परमात्मा के सान्निध्य में आया जीवन जीने की कला आ गई। व्यापार और कार्य व्यवहार तो फिर अपने आप ही होने लगता है।
रवि अग्रवाल, प्रतिष्ठित व्यवसायी, दिल्ली
——————————————————————

अंग-अंग हो जाता रोमांचित

मेरा सौभाग्य है कि मुझे माउण्ट आबू में आने का अवसर मिलता है। परमात्मा से मिलना मेरे लिए बड़ी बात है। उस स्थान पर जाते ही हम रोमांचित हो जाते है। इतनी बड़ी संख्या में लोग होने के बाद भी हर एक से परमात्मा का संवाद होता है। हर एक समझता है कि परमात्मा मेरे से बात कर रहा है। परमात्मा की दृष्टि मिलते ही शरीर का प्रत्येक अंग रोमांचित हो जाता है और उसके स्नेह का लेप लग जाता है।

मन में कोई तमन्ना नहीं रह जाती। यह सच है परमात्मा अवतरित होकर अपने बच्चों के लिए नई दुनिया की स्थापना कर रहा है।
रमेश माने, एक्यूप्रेसरिस्ट और मैस्योर, भारतीय क्रिकेट टीम
——————————————————

मुझे शिवबाबा से मिलने का अवसर मिला

मेरा अति सौभाग्य था कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के माउण्ट आबू मुख्यालय में में मुझे परमपिता परमात्मा शिव बाबा से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। यहां मुझे परमपिता परमात्मा का ईश्वरीय संदेश व वरदान आदरणीय दादी हृदयमोहिनी जी के द्वारा मिला। मैं अपने-आप को भाग्यशाली समझता हूं जो मुझे स्वयं शिव बाबा से मिलन मनाने का शुभ अवसर मिला। मुझे यहां आकर के अच्छी अनुभूति हुई। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था समाज में जागृति लाने का सराहनीय कार्य कर रही है।
डीआर कार्तिकेयन, पूर्व निदेशक, सीबीआई, दिल्ली
——————————————————————————

ईश्वरीय संदेश

इस वर्ष निराकार परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण की 76वीं जयंती मना रहे हैं। जहां एक ओर परमात्मा शिव अनेक आध्यात्मिक रहस्यों का उद्घाटन करके सत्य धर्म की स्थापना का दिव्य-कर्म कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर इस पुरानी-पतित दुनिया के विनाश के लिए महाप्रलयकारी आणविक अत्रों का जखीरा भी तैयार हो चुका है। इसके साथ ही प्राकृतिक शक्तियां भी उग्र स्वरूप प्रदर्शित कर रही हैं। तापक्रम में वृद्धि, मौसम में परिवर्तन, भूकंप इत्यादि प्राकृतिक आपदाओं में भी तीव्रता आ रही हैं। ये पुरानी दुनिया के अन्त का स्पष्ट संकेत हैं। अतः सर्व मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमांत्रण है कि वर्तमान संगमयुग में निराकार परमात्मा शिव तथा स्वयं को यथार्थ रीति से पहचान कर निकट भविष्य में आने वाली नई सतयुगी दैवी-संस्कृति, प्रधान दुनिया के अपने जन्मसिद्ध ईश्वरीय वर्से को प्राप्त करें। ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा अपने तमोगुणी संस्कारों का शमन करें और दिव्य गुणों को धारण करें। इसकी अधिक जानकारी के लिए ब्रहाकुमारीज़ संस्था के नजदीकी सेवाकेन्द्र पर संपर्क करें।
————————————————————

पीस ऑफ माइंड चैनल ईश्वरीय उपहार

आज का युग आधुनिक युग है। ऐसे युग में सभी को ईश्वरीय निमंत्रण और परिचय मिले। इसके लिए विज्ञान के साधनों का अहम योगदान है। जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित एवं प्रसारित होता है। ऐसे में ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा संचालित पीस ऑफ माइंड चैनल एक ईश्वरीय उपहार है। केवल टीवी जिसे वीडियोकान, रिलायंस डीटीएच के अलावा इसे केवल पर कहीं भी देखा जा सकता है।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें मो... 814021111
ईमेलः karunabk@gmail.com
—————————————————————————————————

प्रकाशकः ब्रह्माकुमार करुणा द्वारा मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन विभाग ब्रह्माकुमारीज के लिए प्रकाशित एवं डीबी प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करेः मोबाइल9413384884, 9414156615, 9414193999 फोनः 02974-228230,
Email: bkmediaprhq@gmail.com